



परजीवी रोगों से पशुओं का बचाव एवं उपचार

राजेश नेहरा

पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालयए राजुवासए बीकानेर

पशुधन का समाज में महत्त्व

मनुष्य जीवन का सुख, स्वास्थ्य, सम्पदा एवं सम्पूर्णता प्रकृति के अनुदानों पर आश्रित है। स्वस्थ पशु एवं विशाल वन सम्पदा प्रकृति की आधारभूत आवश्यकता है। हमारे किसान भाइयों से बढ़कर शायद ही कोई पशुओं के महत्त्व को समझता हो। पशुधन किसानों की खुशहाली एवं आर्थिक समपन्नता का प्रतीक आदिकाल से माना गया है।

पशु स्वास्थ्य एवं परजीवी रोग

स्वस्थ पशु ही उत्पादक हो सकते हैं। पशुओं से होने वाले परजीवी रोग अधिकतर इस प्रकार के होते हैं कि उनमें लक्षण अच्छी तरह प्रकट नहीं होते, उत्पादकता जरूर गिर जाती है। किसान भाई समझ नहीं पाते कि सब कुछ ठीक लगता है पर जब दूध उत्पादन में गिरावट क्यों आ गयी, बैल जल्दी थक जाते हैं। बच्चाके की बढ़वार धीमी हो जाती है। पशु कभी ठीक से खाता है पर अंग नहीं लगता है। ऐसे में पशु पालक अच्छे से अच्छा व अधिक से अधिक खिलाने की कोशिश करते हैं। पर सब निरर्थक होता है हो सकता है ऐसी परिस्थिति में आपके पशु को परजीवी रोग हो। परजीवी रोग भी कई प्रकार के होते हैं जैसे आंतो, पेट, लिवर में होने वाले गोल, चपटे या फीते के आकार के कृमि। ये कृमि काफी बड़े होते हैं। दूसरे रक्त में या आंतो में पाये जाने वाले सूक्ष्म परजीवी। ये आँखों से दिखाई नहीं देते। सूक्ष्मदर्शी यंत्र द्वारा देखना ही सम्भव है। तीसरे प्रकार के परजीवी तो प्रायः सभी पशुओं में देखे जा सकते हैं। ये हैं बाह्य परजीवी जिन्हें किलनी या चीचड़ भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त खून

चूसने वाली मक्खियाँ एवं मच्छर भी रोग फैलाने के लिए जिम्मेदार हैं।

परजीवी रोग के प्रमुख लक्षण

- गाय भैंस में अधिकतर देखा गया है कि लिवर में चपटे कृमि हो जाते हैं। भूख न लगना, निचले जबड़े के बीच सूजन आ जानाए छूने पर खाल में खुश्की महसूस होना, पशु का सूखते जाना, कीभी दस्त कभी कब्ज, हल्का बुखार, कमजोरी तथा कभी-कभी गिर पड़ ना या मृत्यू हो जाना इस रोग के लक्षण हो सकते हैं।
- आंतो व पेट में होने वाले गोल व चपटे कृमि पशुओं के लिए हानिकारक हैं। पशुओं में पतलें बदनदार दस्त पशुओं का सूखते जाना, खाल की खुश्की इसके प्रमुख लक्षण हैं। कभी-कभी गाय भैंस के बच्चों में छोटे गोल कृमि भी हो जाते हैं इसके अतिरिक्त सूक्ष्म परजीवी भी पतले दस्तों का कारण होते हैं। बच्चों में दस्त के साथ कभी खून व आँव भी आने लगती है और उपचार समय पर न होने पर मृत्यू की सम्भावना रहती है।
- पशुओं के खून में पाये जाने वाले सूक्ष्म परजीवी जैसे: थाइलेरिया, बबेसिया तथा ट्रिपनोसोमा किलनी तथा खून चूसने वाली मक्खियों से फैलने वाले परजीवी स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक हैं। अतः पशुओं के खून की जाँच करवाना अति आवश्यक है।
- किलनी एवं मक्खियाँ पशुओं में खून चूसकर उन्हें कमजोर कर देती हैं। पशु रक्त-अल्पता से पीड़ित रहते हैं। चोट लगे घाव पर कुछ



मक्खिया अण्ड दे देती है व फिर कीड़े पड़ जाते हैं। ऐसी स्थिति में घाव आसानी से ठीक नहीं हो पाते हैं।

परजीवी रोगों की रोकथाम

परजीवी रोग जैसा कि विदित है कोई छूत का रोग नहीं है। ये रोग किसी माध्यम के कारण फैलते हैं। अतः यदि माध्यम पर किसी तरह से राक लगा दी जाये तो रोग की रोकथाम स्वतः ही हो जाती है। देखा गया है कि गाँवों के तालाबों में विभिन्न प्रकार के घोघें होते हैं। ये स्वयं तो पशुओं के लिए हानिकारक होते हैं किन्तु रोग फैलाने में माध्यम का कार्य करते हैं। अतः इनकी रोकथाम अति आवश्यक है। तालाबों के आस-पास की हरी घास, कीचड़ व गन्दे पानी से पशुओं को दूर रखे। पीने के लिए उन्हें स्वच्छ पानी दें। तालाब के चारों ओर कंटीले तार लगाये जा सकते हैं।

बत्तख पाली जा सकती है जो घोघों का खा जाती है। पशु चिकित्सक की सलाह से कुछ दवाओं का छिड़काव भी किया जा सकता है जो घोघों का रोकने का कारगर तरीका हो सकता है।

पशुओं की समय-समय पर जाँच आवश्यक है। रोग का प्रथम चिन्ह पाये जाने पर शीघ्र उपचार, आपको आर्थिक संकट से बचा सकता है। पशुओं को जहां तक संभव हो सके किलनियों से मुक्त रखना चाहिए। ये किलनियां पशुओं में रक्त के भयावह रोग जैसे— थाईलेरियोसिस, बेबिसिओसिस ही नहीं फैलाती, बल्कि खून भी चूसती है व उन्हें कमजोर बनाती है। इसी तरह विभिन्न प्रकार की खन-चूसने वाली मक्खियों से भी पशुओं को मुक्त रखना चाहिए। प्रमुख सावधानियों में पशुघर एवं आसपास की सफाई, पशुघर के फर्श का सूखा रहना। घर कच्चा हो तो

समय-समय पर लीपना और यदि पक्का होतो टूटे फर्श की मरम्मत व पुताई जरूरी है। इतना ही नहीं बरसात व उसके बाद कुछ दवाओं का छिड़काव लाभप्रद होता है। इसी प्रकार गोबर का ढेर अधिक दिन नहीं लगने देना चाहिए। पशुघर के आसपास चूना छिड़कना, तालाब या पोखर में तेल का छिड़काव मक्खी मच्छर की रोकथाम का कारगर उपाय है।

बाजार में उपलब्ध ऐलबेन्डाजोल बोलस या सीरप 5 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम शारीरिक भार या हाईटेक बोलस 0.5 मिलीग्राम/किलोग्राम शारीरिक भार के हिसाब से मुंह द्वारा दी जा सकती है। इन्जेक्शन द्वारा आइवरमेक्टीन 0.5 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम शारीरिक भार के अनुसार दी जा सकती है जो आंतरिक एवं बाह्य परजीवी दोनों के लिए कारगर है।